9 नवम्बर 2016 को स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के महिला सम्मेलन के लिए माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

1. सरकार ने आम लोगों, विशेषकर महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से स्वच्छ भारत मिशन को वर्ष 2019 तक प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्य के रूप में प्राथमिकता दी है। मैं समझती हूँ कि बीते दो वर्ष में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत आशातीत प्रगति हुई है, जिसमें 1.14 लाख गांवों और 59 जिलों ने स्वयं को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया है। आप सभी उन चेंज मेकर्स का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिन्होंने इसे संभव बनाया है। **केरल, हिमाचल प्रदेश एवं सिक्किम ने खुद को खुले में शौच से मुक्त राज्य घोषित कर दिया है।**

2. हम सभी जानते हैं कि स्वस्थ जीवन के लिए साफ हवा, पानी, भोजन एवं स्वस्थ पर्यावरण अत्यन्त आवश्यक है। स्वच्छ वातावरण में ही हम स्वस्थ रह सकते हैं और स्वच्छ शरीर में ही स्वच्छ मन का वास होता है। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने सफाई के महत्व पर अपने विचार प्रकट करते हुए महत्वपूर्ण बात कही थी, जिसे मैं यहां उद्धृत करती हूं:–

"When there is both inner and outer cleanliness, it approaches godliness".

3. गांधी जी ने सिर्फ क्विट इंडिया का नारा ही नहीं दिया था, बल्कि उनका एक और नारा था 'क्लीन इंडिया'। स्वच्छता में ही देवत्व का निवास होता है। महात्मा गांधी सामुदायिक स्वच्छता पर भी विशेष बल देते थे। **वास्तव में, गंदगी फेंकने से वातावरण ही नहीं, शरीर और मन भी दूषित होता है। Cleanliness and purity are not matters of instinct but they are matters of education, habit, mentality and principles.**

4. उन्हीं के विचार को आदर्श मानते हुए आज यह अभियान एक जन–आंदोलन का रूप ले चुका है और देश का जनमानस एक स्वस्थ एवं सुन्दर रहने योग्य वातावरण के निर्माण हेतु तैयार है। इसके मूल में आप सभी महिलाओं का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत मिशन–ग्रामीण, न केवल महिलाओं को सुरक्षा और गरिमा प्रदान करता है बल्कि उनकी शक्ति एवं अपने घरों और गांवों को साफ एवं स्वच्छ बनाने की दिशा में उनके दृढ़ निश्चय को भी दर्शाता है। **यह मिशन जनभागीदारी के बिना संभव**

नहीं है और जनभागीदारी के लिए महिलाओं से बेहतर शक्ति और प्रेरणा कोई नहीं हो सकती।

5. एक कहावत है कि यदि एक पुरूष शिक्षित होता है तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है लेकिन यदि एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता हैं। (Women are agents of social changes the world over. When we are educating a women, we are educating society as a whole.) इसी प्रकार, स्वच्छता के बारे में भी हम कह सकते हैं कि स्वच्छता के महत्व के बारे में एक महिला को शिक्षित करें तो पूरा गांव साफ और स्वच्छ हो जाएगा। वास्तव में यह उल्लेखनीय है, क्योंकि हमने देखा है कि अपने गांव को ओडीएफ और स्वच्छ बनाने में महिलाएं अग्रदूत हैं।

6. **Green Earth, Clean Earth is our dream worth. एक स्वस्थ जीवन के लिए यह एक सूत्रवाक्य है और यह हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति में आरंभ से ही सिखाया गया है। हमारी कई परम्पराएं एवं व्यवस्थाएं इस बात की पुष्टि करती हैं।**

7. यह भी सच है कि बचपन से ही बालिकाओं में सफाई एवं सलीके के प्रति प्राकृतिक रूझान होता है। हमने अपने घरों में देखा है कि छोटी–छोटी बालिकाएं भी अपने खेलने एवं पढ़ने के स्थान को और अपनी निजी चीजों को बहुत सफाई एवं सलीके से रखने का प्रयास करती हैं। आप सब महिलाएं जो यहां आज पुरस्कृत हुईं हैं, वे सब इस बात की पुष्टि करती हैं कि महिलाओं की सशक्त भागीदारी ही लोक कल्याण की नीतियों को जन–जन तक पहुंचा कर देश को विकास की राह पर ले जाने में अग्रिम भूमिका निभाती हैं। आपने अपने गांवों को ओडीएफ और स्वच्छ बनाने में जो प्रयास किए हैं, वे निश्चय ही सराहनीय हैं।

8. उल्लेखनीय है कि जीवन के सभी क्षेत्रों से और सभी स्तरों पर महिलाएं चैंपियन के रूप में उभर कर सामने आई हैं चाहे वे मोटिवेटर्स हों, सरपंच हों, सेल्फ हेल्प ग्रुप (एसएचजी) की सदस्य हों, विद्यार्थी हों, नेचुरल लीडर्स हों अथवा प्रशासक हों। महिला होने के नाते यह बताते हुए मैं अत्यंत गर्व महसूस कर रही हूँ कि महिलाओं ने पुरूषों से ज्यादा संवेदनशीलता दर्शाई है और यही वजह है कि स्वच्छ भारत कार्यक्रम में अधिकांश चैंपियन डीसी/डीएम/सीईओ महिलाएं ही हैं।

9. महिलाओं ने न केवल अपने घरों की बल्कि अपने गांवों की जिम्मेदारी भी लेते हुए यह सुनिश्चित करने में प्रमुख भूमिका निभाई है कि उनका गांव स्वच्छ बने और कोई खुले में शौच न करे। निगरानी समिति का सदस्य होने के नाते महिलाएं न केवल अपने गांवों को ओडीएफ बना सकती हैं, बल्कि इसकी निरंतरता भी सुनिश्चित करती हैं। मध्यप्रदेश का इंदौर और हिमाचल प्रदेश का मंडी जिला स्वच्छता में महिला शक्ति को दर्शाने के आदर्श उदाहरण हैं, जहां उन्होंने अपने जिलों को न केवल ओडीएफ बनाने बल्कि इसे स्थायी बनाने में कारगर भागीदारी की है।

10. आजादी के बाद स्वच्छता के लिए कई योजनाएं बनीं और उन्हें लागू किया गया, इसमें आंशिक सफलता भी मिली, परंतु अक्टूबर 2014 में सरकार की योजना ने जन आंदोलन का रूप ले लिया। सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान का एक sub-mission, Swachh Bharat Mission (Gramin) इस उद्देश्य से आरंभ किया है कि 2 अक्टूबर 2019 तक सभी ग्रामीण क्षेत्रों को पूर्ण स्वच्छ बनाने के साथ ही खुले में शौच से मुक्त बनाया जाए। उस दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। मुझे इस बात का गर्व है कि इन्दौर आज देश के उन 59 जिलों में शामिल है, जिन्हें खुले में शौचमुक्त जिला घोषित किया गया है। इस महान लक्ष्य को प्राप्त करने में आप सभी का सहयोग अपेक्षित हैं। आप महिलाएं ही इस संदेश की सूत्रधार हैं। आप देश की कोटि–कोटि जनता की मार्गदर्शक एवं प्रेरक हैं एवं गांधी जी के इस सपने को पूरा कर सकती हैं।

11. महिलाओं ने न केवल मोटिवेटर्स के रूप में कार्यकलापों को पूरा किया है, बल्कि अपने स्वयं के शौचालय निर्माण में मिस्त्री के रूप में और सेल्फ हेल्प ग्रुप के हिस्से के रूप में अपशिष्ट पदार्थ प्रबंधन में भी भाग लिया है। **सुशीला कंवर, काथर जैसी सरपंचों, जिन्होंने यह संकल्प लिया कि वह तब तक अपनी कुर्सी पर नहीं बैठेंगी, जब तक कि उनका गांव ओडीएफ नहीं बन जाता, यह सब महिला नेतृत्व के धैर्य और दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।**

12. कुछ सर्वाधिक प्रेरक प्रसंग उन लड़कियों के हैं जो दुल्हन बनने वाली हैं। कानपुर, ओडिशा, बिहार, हरियाणा और अन्य राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं ने उन परिवारों में शादी करने से मना कर दिया जिनके घरों में शौचालय नहीं थे। इधर, कर्नाटक के एक गांव में एक 15 वर्षीय लड़की लावण्य ने अपने घर में शौचालय की मांग को लेकर 48 घण्टे का अनशन किया। लावण्य की आरंभिक दलील को उसके पिता ने ठुकरा दिया क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे, लेकिन लावण्य की

मांग पर प्रशासन को दखल देना पड़ा और उसके घर के बाहर शौचालय बनाने में उसे सहायता दी गई। लावण्य न केवल पूरे गांव के लिए बल्कि पूरे राज्य और देश के लिए एक रोल मॉडल बन गई है।

13. आज जब मैं आप लोगों को देखती हूँ तो इतना अच्छा काम किए जाने पर गौरवान्वित महसूस करती हूँ। काफी काम कर लिया गया है तथा और बहुत–कुछ हासिल करना बाकी है। आप सबने यह साबित कर दिया है कि **''स्वच्छ भारत मिशन''** वास्तव में एक जन आंदोलन बन गया है। हमें न केवल सफाई की दिशा में प्रयास करना है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि स्वच्छता को केवल महिलाओं का काम न माना जाए अपितु इसे पुरुष एवं महिला दोनों का संयुक्त दायित्व समझा जाए। इस लक्ष्य की दिशा में, सभी संस्थाओं में स्वच्छता का कार्य करने वाली महिलाओं से और बड़ी भूमिका की अपेक्षा करता हूँ। स्वच्छता के कार्य से महिलाओं का सशक्तीकरण होना चाहिए और यह इसकी वास्तविक सफलता होगी।

13. **इस जन–जागृति की वजह से देशभर में शौचालयों का निर्माण हो रहा है लेकिन हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि उनका समुचित उपयोग भी हो। इसके लिए जरूरी व्यवस्थाएं जैसे पानी, सफाई एवं रखरखाव महत्वपूर्ण है, वरना एक नई स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न हो सकती है।** मेरा मानना है कि उन सुविधाओं के लिए आवश्यक चीजों की ओर भी ध्यान दिया जाए। महिलाओं एवं कन्याओं के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए सैनिटरी नैपकिन का उपयोग किया जाना चाहिए। महिलाओं के समक्ष कई समस्याएं है जिनके निदान हेतु महिलाओं को आगे आना चाहिए एवं उन्हें सफाई से संबंधित तरीके के विषय में प्रशिक्षित एवं जागरूक करना चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं का स्वास्थ्य सुरक्षित रहे।

13. लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने में भी महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। वे अपने परिवार, गांव एवं समाज में स्वच्छता संबंधी जागरूकता लाने में सक्षम हैं एवं खाना खाने से पहले एवं बाद में हाथ धोने, शौच के नियमों तथा स्वास्थ्य रक्षा के नियमों को बड़ी आसानी से अपनी आने वाली पीढ़ी को समझाने में सक्षम हैं। आज भी बहुत लोग गांवों में नंगे पांव चलते हैं। उन्हें यह मालूम नहीं है कि ऐसा करके वे कई विपदाओं को आमंत्रण दे रहे हैं। महिलाएं एवं युवक बड़ी ही सहजता से ग्रामवासियों इसके विषय में समझा सकते हैं एवं उन्हें बताकर दूसरों को प्रेरित करने का सूत्र दे सकते हैं।

14. एक और बात है waste management की। यह न केवल आज गांवो, कस्बों बल्कि नगरों और महानगरों की भी गंभीर समस्या है। कुड़ा–कचरा की कई श्रेणियां होती

हैं। कुछ bio-degradable होती हैं तो कुछ non degradable. उनके निपटान के अलग तरीके होते हैं। आज कल तो इलेक्ट्रॉनिक कचरे की भी एक अलग समस्या हो गई हैं। अतः, समय की मांग है कि जन–जन को कूड़ों–कचरों से होने वाले खतरों से भी अवगत कराया जाए। इनसे radiation तक का भी खतरा हो सकता है। अतः, कुड़ा–प्रबंधन के बारे में जानने और लोगों को उसके बारे में बताने की आवश्यकता है। कुछ चीजों को recycle and reuse किया जा सकता है तो कुछ को नहीं। अतः, एक बार फिर यह जिम्मेदारी आप महिलाओं के कंधों पर ही आ जाती है। कूड़ा प्रबंधन में इस बात का ख्याल रखा जाना चाहिए।

15. इसी क्रम में मैंने अपने संसदीय क्षेत्र इंदौर के मोहल्लों–कॉलोनियों, धर्मस्थलों एवं सार्वजनिक स्थानों की सफाई का आह्वान किया, जिसमें महिलाओं सहित सभी ने पूरे जोश एवं उत्साह से भाग लिया एवं सफाई का प्रण लिया। जैसे हम अपने घर की सफाई करते हैं, वैसे ही सार्वजनिक स्थलों व धर्मस्थलों की सफाई करना चाहिए। ऐसा होने पर विश्व में हमारी स्वच्छ छवि बनेगी और लोग पर्यटन हेतु भी भारत की ओर आकर्षित होंगे।

16. हमने देखा है कि इस साल हमारे 10 राज्यों में सूखा पड़ गया था और लोग बूंद–बूंद पानी को तरस गए थे। यहां तक कि महाराष्ट्र के लातूर में पीने के पानी को ट्रेन से भेजा गया था। यह स्थिति की भयावहता को बताता है कि हम सबका ध्यान जल संरक्षण की ओर होना चाहिए। यदि हम अपने जल संसाधनों का इस्तेमाल ढंग से करें तो हम लम्बे समय तक उन संसाधनों का उपयोग कर सकेंगे। चाहे वे नदी हों, तालाब हों, जोहड़ हों, कुएं हों या बावड़ी हों। मैंने अपने संसदीय क्षेत्र में सभी विधायकों, पार्षदों एवं शहर और ग्रामीण क्षेत्र के अन्य जनप्रतिनिधियों को इसके बारे में संवेदनशील बनाया और यह प्रयत्न किया है कि इनकी सफाई तथा संरक्षण किया जाए।

17. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्वच्छ भारत होगा, तभी तो स्वस्थ भारत बनेगा। आप सभी ने इस दिशा में नवीन कदम उठाया है और खुद प्रेरित हुए हैं और बहुतों को प्रेरणा दी है। इसलिए, आप सभी सम्मान प्राप्त करने की हकदार हैं। मंच पर उपस्थित सभी लोग आपका हार्दिक अभिनंदन करते हैं। मेरी कामना है कि जिस मनोयोग से आपने इस कार्य को राष्ट्र धर्म समझकर किया है, आगे भी करते रहें एवं एक स्वस्थ, संतुलित, विकसित एवं समर्थ समाज के निर्माण में अपना सहयोग निरंतर देते रहें।

इन पंक्तियों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करती हूं:–

''मेरा गांव या शहर साफ हो, इसमें जन–जन का हाथ हो।
स्वच्छता का दीप जलाएंगे, चारों ओर उजियारा फैलाएंगे।''

————————